INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भारतीय दर्शन में ज्ञान मीमांसा का मूल्यांकन

डॉ. विनय कुमार

सहायक प्राध्यापक

दर्शनशास्त्र विभाग

टी.पी. कॉलेज मधेपुरा।

भारतीय दर्शन में प्रमुखतया तीन धाराएँ तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा व आचारमीमांसा के रूप में प्रचलित है। ज्ञानमीमांसा के अन्तर्गत प्रमा, प्रमेय, प्रमाण आदि पर चर्चा प्राप्त होती है, जिसमें ज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र में भारतीय ज्ञानमीमांसा के विभिन्न पक्षों का दार्शनिक अवलोकन करने का प्रयास किया जा रहा है।

मनुष्य एक बौद्धिक प्राणी है जानने की इच्छा उसमें मूलतः विद्यमान होती है ज्ञान क्या है? वह क्या है जो अज्ञान न होकर ज्ञान है? इत्यादि मानव बुद्धि के विचारणीय विषय है। जिस तरह संसार के समस्त पदार्थों का विश्लेषण किया जाता रहा है उसी प्रकार ज्ञान के स्वरूप का भी विश्लेषण किया जाता है, यद्यपि ज्ञान के सम्बन्ध में प्राचीन मनीषियों ने जो कुछ भी कहा है उसमें विवाद है तथा एक निश्चित निष्कर्ष में नहीं डाला जा सका है फिर भी ज्ञान का जो विश्लेषण किया जाता है, वह महत्वपूर्ण है। भारतीय दर्शन में ज्ञान के विषय में प्रमुख विचारों का अवलोकन प्रस्तुत किया जा रहा है—

न्यायसूत्र में गौतम ने बुद्धि और उपलब्धि का पर्यायवाची ज्ञान को बताया है उनके यहां ज्ञान पूर्व अवस्थित विषयों की ही प्रकाशित करता है तथा यह विषय को प्रकाशित करता है ना कि उत्पन्न करता है। बुद्धि, उपलब्धि, ज्ञान का सम्बन्ध अवभास या प्रकाश से है[1] इस प्रकाश को ही वस्तु का प्रकाशक माना जाता है। नैयायिक अन्नम्भट्ट के अनुसार समस्त व्यवहारों के हेतु को ज्ञान कहा जाता है।[2] यह मत अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि विषय से पूर्व विद्यमान ना रहने के कारण ज्ञान किसे प्रकाशित करेगा?

नैयायिक ज्ञान को आत्मा का स्वभाव ना मानकर आगन्तुक गुण स्वीकार करते है, तथा आत्मा ज्ञान न होकर ज्ञाता के रूप में स्वीकार किया जाता है। तथा इस आत्मा में चैतन्य का विस्तार तब होता है जब इन्द्रिय का विषयों से सम्पर्क, मन का इन्द्रियो से और आत्मा का मन से सम्पर्क होता है।

मीमांसक ज्ञान को कर्म मानते है तथा कुमारिल प्रमा अर्थात् यथार्थ ज्ञान तथा प्रमाण को एक ही स्वीकार करते है। इनके अनुसार प्रमा अनधिगत ज्ञान है अर्थात प्रमा से हमे सदैव नवीन विषय की उपलब्धि होती है। कुमारिल ज्ञान को आत्मा का कार्य तथा आत्मा को ज्ञान का कर्ता मानते है चैतन्य आत्मा का स्वभाव ना होकर विशेष अवस्था में होने वाला विशेष धर्म है। प्रभाकर का मत न्याय के निकट माना जाता है ये प्रमा व प्रमाण में भेद भी स्वीकार करते है इन्होंने ज्ञान के स्थान पर संवित् शब्द का प्रयोग किया है तथा अनुमान से यह ज्ञात होता है कि ज्ञान आत्मा का कार्य है।

सांख्य दर्शन में सम्पूर्ण ज्ञान मीमांसा बुद्धि वृत्ति के अन्तर्गत मानी जाती है बुद्धि अर्थात प्रकृति का कार्य है और ज्ञान का साधन है इस तरह से ज्ञान के समस्त साधन अचेतन हुए। अद्वैत वेदान्त में ब्रह्मा को एक मात्र सत्य स्वीकार किया जाता है, माया के कारण समूचा विश्व है। शंकराचार्य के मत में सत् और असत् का विभाजन बुद्धि के अधीन होता है तथा जिस पदार्थ को विषय करने वाली बुद्धि बदलती नहीं वह पदार्थ सत् है और जिसको विषय करने वाली बुद्धि बदलती है, वह असत् है।[3]

बौद्ध दर्शन के वैभाषिक सम्प्रदाय में ज्ञान एवं ज्ञेय दोनों को ही वास्तविक माना जाता है, तथा बाह्य वस्तुओं की ही सत्ता प्रत्यक्ष के द्वारा मानी गई है उनके अनुसार मन में विषय का आन्तरिक स्वरूप आना ही ज्ञान है। सौत्रान्तिक के अनुसार मानसिक व बाह्य पदार्थ दोनों सत् है उनके अनुसार बाह्य वस्तुओं की सत्ता अनुमानगम्य है तथा मानसिक धारणाओ से मन बाह्य वस्तु का अनुमान कर लेता है।

विज्ञानवादियों का मत है कि बाह्य पदार्थों की कोई सत्ता नहीं है विज्ञान की ही एकमात्र सत्ता है। माध्यमिक सम्प्रदाय के अनुसार परमसत संकेतित करने का एकमात्र सम्भव तरीका परमसत् विषयक समस्त कथनो व दृष्टिकोणों का निषेध मानते है। इस प्रकार ज्ञान पर विभिन्न मत भारतीय दर्शन में प्राप्त होते है जो कि अपनी-अपनी तत्वमीमांसा के अनुरूप दिखाई देती है क्योंकि भारतीय दर्शन में ज्ञानमीमांसा मूलरूप से तत्वमीमांसा के सहायक के रूप में उपस्थित रही है, भारतीय दर्शन में ज्ञानमीमांसीय चिन्तन अनेक रूपों में प्राप्त होती है लेकिन कही ना कही उनका मुख्य लक्ष्य तत्वमीमांसा के प्रमाणीकरण से रहा है क्योंकि भारतीय दर्शन में ज्ञान की अवस्था मोक्ष की ओर प्रवृत्त मानी जाती है। न्यायसूत्र में आचार्य गौतम ने सम्पूर्ण ग्रन्थ के प्रयोजन को निःश्रेयस की प्राप्ति बताया है।[4]

ज्ञान के स्वरूप पर चर्चा के लिए आवश्यक है कि प्रमा, प्रमेय, प्रमाता आदि पर भी चर्चा की जाए। प्रमा शब्द यथार्थ ज्ञान का द्योतक है, यह किसी वस्तु के असंदिग्ध तथा यथार्थ अनुभव को कहा जाता है। प्रमा के अस्तित्व को प्रत्येक भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय में स्वीकार किया जाता है प्रमा शब्द के इतिहास क्रम को

देखे तो प्रारम्भ में प्रमा केवल ज्ञान के पर्यायवाची के रूप में प्रयुक्त होता था। वात्स्यायन प्रमाता, प्रमेय, प्रमाण और प्रमिति शब्दों को अर्थ का विज्ञान कहते हैं, परन्तु कालान्तर में प्रमा शब्द यथार्थ ज्ञान के लिए प्रयुक्त होता है। प्रमा की विशेषताओ के सन्दर्भ में विभिन्न मत भारतीय दर्शन में प्रचलित है, सामान्यतः प्रमा में कुछ विशेषताएँ अपेक्षित हैं – वह ज्ञान निश्चयात्मक होना, अर्थ विषय के अनुरूप होना, स्मृति रूप से पहले प्राप्त नही होना, ज्ञान का अन्य के द्वारा बाध ना होना, ज्ञान का अर्थक्रियाकारी व संदेहरहित होना इत्यादि। प्रमाता से अभिप्राय जब व्यक्ति किसी विषय को प्राप्त करने या त्यागने की इच्छा से प्रवृत्त होता है वह प्रमाता कहलाता है।[5]

प्रमेय से अभिप्राय ज्ञान के विषय से है, प्रमाता को ज्ञान प्राप्त करने के लिए ज्ञान का विषय होना आवश्यक है। प्रमेय के विषय में यह भी व्याख्या प्राप्त होती है कि जिस विषय को जाना जाता है, वह प्रमेय हैं।[6] भारतीय दर्शन में अपने अपने प्रतिपाद्य के अनुरूप भारतीय दर्शन के प्रत्येक सम्प्रदाय में प्रमेय की संख्या का निर्धारण किया जाता है। न्यायदर्शन में बारह पदार्थों आत्मा, शरीर, इन्द्रिय, इत्यादि को प्रमेय स्वीकार किया गया है। जिस साधन के द्वारा प्रमाता का प्रमेय से सम्बन्ध होता है प्रमाण कहलाता है। ज्ञान की उत्पत्ति में प्रमाता तथा प्रमेय के अतिरिक्त प्रमाण भी महत्वपूर्ण है। प्रमाण ज्ञान प्राप्ति का साधन होता है और इसी से अर्थ प्रतीति की सिद्धि होती है और बिना अर्थ प्रतीति के प्रवृत्ति सामर्थ्य भी नहीं हो सकती। प्रमेयों की सिद्धि के लिए प्रमाणों की उपयोगिता होती है।[7] भारतीय दर्शन में प्रमा के कारण को प्रमाण कहा जाता है। विभिन्न भारतीय दार्शनिक सम्प्रदायों ने अपने प्रतिपाद्य की दृष्टि से प्रमेय की व्याख्या की तथा प्रमाणों की संख्या निर्धारित की। यथा चार्वाक केवल एक प्रमाण प्रत्यक्ष को स्वीकार करते है बौद्ध व वैशेषिक दो प्रत्यक्ष व अनुमान प्रमाण स्वीकार करते है जैन परम्परा में तीन प्रत्यक्ष, अनुमान व शब्द प्रमाण स्वीकृत है इत्यादि। इस प्रकार ज्ञान की उत्पत्ति के लिए बहुत से तत्वों की आवश्यकता है जिनमें ज्ञाता, ज्ञेय, प्रमाण आदि महत्वपूर्ण हैं, ये ज्ञान के लिए आवश्यक तत्व हैं। सम्पूर्ण भारतीय दर्शन में तत्वमीमांसीय प्रतिबद्धता के अनुरूप ज्ञानमीमांसीय दृष्टि परिलक्षित होती है।

भारतीय दर्शन की ज्ञानमीमांसीय दृष्टि इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि जगत का स्वरूप, जीव व ईश्वर से सम्बन्धित विचारणीय तत्वों का ज्ञान भी हमें इस माध्यम से ही होता है क्योंकि मनुष्य जीवन की समस्त क्रियाएँ ज्ञान पर ही आधृत है चाहे वह व्यावहारिक रूप में हो या दार्शनिक रूप में। विभिन्न दार्शनिक अवधारणाएँ यथा तत्वमीमांसा, सत्तामीमांसा, नीतिमीमांसा आदि की व्याख्या तथा विश्लेषण के लिए भी ज्ञानमीमांसा ही आधारभूत है। इस प्रकार भारतीय ज्ञानमीमांसा दार्शनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

सन्दर्भ :

1. अर्थप्रकाशको बुद्धि। -तर्कभाषा

2. सर्वव्यवहार हेतुर्ज्ञानम्। -तर्कसंग्रह

3. यद्विषया बुद्धि न व्यभिचरति तत् सत्, यद्विषया व्यभिचरति तद असद् इति सद सिद्धन्तो बुद्धितन्त्रे स्थिते। गीता शा. भा. पृ0 16

4. न्यायसूत्र 1/1/1

5. तत्र यस्येप्साजिज्ञासाप्रयुक्तस्य प्रवृत्तिः सः प्रमाता। न्यायदर्शन

6. याथार्थं प्रमीयते तत्प्रमेयम्। न्यायभाष्य

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM